# यथार्थ

*श्री सुहास खोब्रागड़े*
*वैज्ञानिक बी*

वे बोले, तुम्हारी कलम में,
सौंदर्य बोध का अभाव है ।
कबीर, नानक एवं फुले के विद्रोह का,
बेहद दिख पड़ता प्रभाव है ।

हमने अंतरंग मित्र से कहा,
जो कुछ हमने भोगा,
और जो कुछ हमने सहा,
वही तो हम आज लिख रहे हैं ।
फिर भी हम आपको,
क्यों अनावश्यक दिख रहे हैं ?

समता एवं बंधुता की नींव पर
नवभारत का निर्माण कराना है ।
मनुस्मृती को करके दफन,
नवयुग का शिल्प सजाना है ।

***